नव मुस्लिम के लिए संक्षिप्त एवं मुफ़ीद किताब

संकलनकर्ता

मुहम्मद अश-शहरी

المختصر المفيد للمسلم الجديد -هندي

بيان الإسلام
Bayan AL-Islam

جمعية خدمة المحتوى الإسلامي باللغات ، ١٤٤٥ هـ

الشهري ، محمد

المختصر المفيد للمسلم الجديد - هندي. / محمد الشهري - ط.١ -.

الرياض ، ١٤٤٥هـ

٤٠ ص ؛ ١٤ × ٢١ سم

ردمك: ٢-٤٩-٨٤١٢-٦٠٣-٩٧٨

١٤٤٥ / ١٢٣٥٣

Partners in Implementation

Content Association

Rowad Translation

Rabwah Association

IslamHouse

This publication may be printed and disseminated by any means provided that the source is mentioned and no change is made to the text.

Tel: +966 50 244 7000

info@islamiccontent.org

Riyadh 13245-2836

www.islamhouse.com

शुरू अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान्, असीम दया वाला है।

प्रस्तावना

सभी प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा और गुणगान करते हैं, उसी से सहायता माँगते हैं और उसी से क्षमा याचना करते हैं। तथा हम अपनी आत्मा की बुराइयों और अपने दुष्कर्मों से अल्लाह की शरण में आते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, और जिसे वह गुमराह करे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। तथा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे तथा रसूल हैं।

तत्पश्चात:

अल्लाह तआला ने मनुष्य को बड़ा सम्मान दिया है और उसे अपनी बहुत-सी सृष्टियों से उत्कृष्ट बनाया है। स्वयं अल्लाह ने फरमाया : "वास्तव में हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की है।" [सूरतुल- इसरा : 70] फिर उसने इस उम्मत के लोगों को अतिरिक्त सम्मान यह दिया कि उनकी ओर अपने सर्वश्रेष्ठ नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को भेजा, उनपर अपना सबसे उत्कृष्ट ग्रंथ क़ुरआन उतारा और उनके लिए अपने महानतम धर्म इस्लाम को पसंद किया। महान अल्लाह ने फरमाया : "(ऐ मुसलमानों!) तुम सर्वश्रेष्ठ समुदाय हो, जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का

आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और यदि किताब वाले ईमान लाते, तो उनके लिए बेहतर होता। उनमें कुछ ईमान वाले भी हैं, लेकिन उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी ही हैं।" [सूरत आल-इमरान : 110]

इनसान पर अल्लाह का सबसे बड़ा उपकार यह है कि वह उसे इस्लाम का मार्ग दिखाए और उसपर मज़बूती से जमे रहने तथा उसके विधि-विधानों पर अमल करने का संयोग प्रदान करे। इस किताब के माध्यम से, जो आकार में छोटी लेकिन विषय वस्तु की दृष्टि से बड़ी है, एक नया-नया इस्लाम धर्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति उन बातों को सीख सकता है जिनकी इस नए मार्ग की यात्रा आरंभ करते समय अनदेखी नहीं की जा सकती। इसमें संक्षिप्त तथा आसान शैली में इस महान धर्म की बुनियादी बातों को समझाया गया है। जब इनसान इन बुनियादी बातों को समझ लेता है और इनके अनुसार काम करता है तो आगे अधिक ज्ञान अर्जन करता जाता है और अपने महान पालनहार, नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- और इस्लाम धर्म के बारे में जानकारी बढ़ाता जाता है। फलस्वरूप अपने रब की इबादत अंतर्दृष्टि तथा ज्ञान के साथ करता है, उसका दिल संतुष्ट रहता है और वह अल्लाह की इबादत तथा उसके नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के अनुसरण के मार्ग पर चलकर अपने ईमान में वृद्धि करता जाता है।

दुआ है कि अल्लाह इस किताब के हर शब्द में बरकत दे, इससे इस्लाम तथा मुसलमानों को लाभ पहुँचाए, इसे अपने सम्मानित चेहरे के लिए विशुद्ध बनाए और सभी जीवित तथा मृत मुसलमानों को इसका प्रतिफल प्रदान करे।

अल्लाह का दुरूद व सलाम बरसे हमारे नबी मुहम्मद तथा आपके परिजनों और सभी साथियों पर।

मुहम्मद बिन शैबा अश-शहरी
2/11/1441 हिजरी

मेरा रब अल्लाह है

• महान अल्लाह ने फरमाया : "ऐ लोगो! अपने उस पालनहार की इबादत करो, जिसने तुम्हें तथा तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच जाओ।" [सूरतुल-बक़रा : 21]

• महान अल्लाह ने फरमाया : "वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं है।" [सूरतुल-हश्र : 22]

• महान अल्लाह ने फरमाया : "उसके जैसी कोई नहीं है, तथा वह सब कुछ सुनने, सब कुछ देखने वाला है।" [सूरतुश-शूरा : 11]

• अल्लाह ही मेरा और सारी चीज़ों का पालनहार है, अधिपति, सृष्टिकर्ता, जीविका दाता और हर चीज़ का प्रबंधन करने वाला है।

• वही अकेला इबादत का हक़दार है। उसके सिवा न कोई पालनहार है और न उसके अलावा कोई पूजा के योग्य है।

• उसके अच्छे-अच्छे नाम तथा ऊँचे-ऊँचे गुण हैं, जिन्हें स्वयं उसने अपने लिए तथा उसके नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने उसके लिए सिद्ध किए हैं। ये सारे नाम तथा गुण पूर्णता तथा सुंदरता की पराकाष्ठा को प्राप्त किए हुए हैं। उस जैसा कोई नहीं है और वह सब कुछ सुनने वाला तथा सब कुछ देखने वाला है।

उसके कुछ अच्छे नाम इस प्रकार हैं:

अर-रज़्ज़ाक़, अर-रहमान, अल-क़दीर, अल-मलिक, अस-समी, अस्-सलाम, अल-बसीर, अल-वकील, अल-ख़ालिक़, अल-लतीफ़, अल-काफ़ी और अल-ग़फ़ूर।

अर-रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) : जो सारे बंदों की रोज़ी का ज़िम्मेदार है, जिसपर उनके दिलों और शरीर का आधार है।

अर-रहमान (दयावान) : महा विशाल दया वाला, जिसकी दया सभी चीजों को समाहित है।

अल-क़दीर (क्षमतावान) : संपूर्ण क्षमता वाला, जो न तो कभी असमर्थ होता है और न ही उसे सुस्ती आती है।

अल-मलिक (बादशाह) : जो महानता, आधिपत्य और प्रबंधन के गुणों के साथ विशिष्ट है, सभी चीज़ों का मालिक एवं उन्हें अपने हिसाब से संचालित करने वाला है।

अस-समी' (सब कुछ सुनने वाला) : जो सभी सुनाई देने योग्य वस्तुओं का बोध रखता है, चाहे वे गुप्त स्वर वाली हों या ऊँची स्वर।

अस-सलाम (दोषरहित) : हर कमी, त्रुटि और दोष से पाक।

अल-बसीर (सब कुछ देखने वाला) : जिसकी दृष्टि से कोई छोटी से छोटी चीज़ भी ओझल नहीं है। जो हर चीज़ को देखने वाला, हर चीज़ की सूचना और हर रहस्य का ज्ञान रखने वाला है ।

वकील (कार्यसाधक) : जो अपनी सृष्टियों को रोज़ी देने वाला, उनके हितों का रक्षक है, जो अपने वलियों की देखभाल करता है, उनके लिए आसानियाँ पैदा करता है और उनके सारे मामलों के लिए पर्याप्त है।

अल-ख़ालिक़ (सृष्टिकर्ता): जो सारी वस्तुओं का सृष्टिकर्ता और उन्हें बिना किसी पूर्व उदाहरण के अस्तित्व में लाने वाला है।

अल-लतीफ़ (कृपालु): जो अपने बंदों को सम्मानित करता है, उन पर दया करता है, और उनकी विनती पूरी करता है।

अल-काफ़ी (पर्याप्त) : जो अपने बंदे की तमाम ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है और जिसकी सहायता के बाद किसी और की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती है।

अल-ग़फ़ूर (क्षमा करने वाला) : जो अपने बंदों को उनके गुनाहों के कुप्रभाव से बचाता है और उन्हें उनके किए की सज़ा नहीं देता।

मुसलमान अल्लाह की अद्भुत सृष्टि और उसकी सुविधा पर विचार करता है, इसी में प्राणियों की अपने बच्चों की देखभाल, उन्हें खिलाने के लिए उत्सुक होना और जब तक वे खुद पर निर्भर नहीं हो जाते तब तक उनकी देखभाल करना शामिल है। अतः पवित्र है वह अल्लाह, जो उनका सृष्टिकर्ता है उनके प्रति दयालु है। यह उसकी दयालुता ही का प्रदर्शन है कि उसने उन्हें वह सब कुछ प्रदान किया है जो उनकी सारी कमजोरी के बावजूद उनकी मदद करने वाला है और उनकी स्थिति को ठीक करने वाला है।

मेरे नबी मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - हैं

महान अल्लाह ने फरमाया : "निःसंदेह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है। तुम्हारा कठिनाई में पड़ना उसपर बहुत कठिन है। वह तुम्हारे कल्याण के लिए अति उत्सुक है, ईमान वालों के प्रति बहुत करुणामय, अत्यंत दयावान् है। ।" [सूरतुत-तौबा : 128].

एक अन्य स्थान पर फरमाया : "और (ऐ नबी!) हमने आपको समस्त संसार के लिए दया बना कर भेजा।" [सूरतुल-अंबिया : 107].

मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- उपहार स्वरूप प्रदान किए गए दया हैं :

हमारे नबी **मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह** -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- हैं, जो नबियों तथा रसूलों के सिलसिले की अंतिम कड़ी हैं। अल्लाह ने आपको इस्लाम धर्म के साथ सभी मानवजाति की ओर भेजा, ताकि लोगों को भलाई का मार्ग दिखाएँ, जिसमें सबसे महान तौहीद (एकेश्वरवाद) आता है, और बुराई से रोकें, जिसका सबसे भयानक रूप शिर्क (बहुदेववाद) है।

आपने जो आदेश दिए हैं उनका पालन करना, जो सूचनाएँ दी हैं उनकी पुष्टि करना और जिन बातों से रोका है उनसे रुक जाना तथा आपके बताए हुए तरीक़े के अनुसार ही अल्लाह की इबादत करना ज़रूरी है।

आपका संदेश तथा आपसे पहले के सभी नबियों का संदेश अकेले अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना है, जिसका कोई साझी नहीं।

नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के कुछ गुण इस प्रकार हैं:

- सत्यता
- दया
- सहनशीलता
- धैर्य
- वीरता
- उदारता
- उच्च व्यवहार
- न्याय
- विनम्रता
- क्षमा।

पवित्र क़ुरआन मेरे रब की वाणी है

महान अल्लाह ने फरमाया : "ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आया है और हमने तुम्हारी ओर एक स्पष्ट प्रकाश उतारा है।" [सूरतुन-निसा : 174]।

पवित्र क़ुरआन अल्लाह की वाणी है, जिसे उसने अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा है, ताकि वह लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर निकाल लाए और उन्हें सीधा मार्ग दिखाए।

उसे पढ़ने वाले को बड़ा प्रतिफल प्राप्त होता है और जो उसके बताए हुए मार्ग पर चलता है वह सही पथ पर चलता है।

आइए इस्लाम के स्तंभों के बारे में जानें

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया : "इस्लाम के पाँच स्तंभ (अरकान) हैं, इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं है और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ स्थापित करना, ज़कात देना, रमज़ान महीने के रोज़े रखना तथा अल्लाह के घर (काबा) का हज्ज करना।"

इस्लाम के स्तंभ ऐसी इबादतें हैं जिनका पालन करना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है। किसी इनसान के इस्लाम के सही होने के लिए ज़रूरी है कि वह उनके ज़रूरी होने का विश्वास रखने के साथ-साथ उनका पालन करे। क्योंकि इस्लाम रूपी भवन इन्हीं स्तंभों पर खड़ा है और इसी बात को ध्यान में रखते हुए इन्हें इस्लाम के स्तंभ कहा जाता है।

ये स्तंभ इस प्रकार हैं:

प्रथम स्तम्भ : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के रसूल हैं।

महान अल्लाह ने फरमाया : "तथा जान लो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है।" [सूरत मुहम्मद: 19]।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फरमाया : "निःसंदेह तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आया है। तुम्हारा कठिनाई में पड़ना उसपर बहुत कठिन है। वह तुम्हारे कल्याण के लिए अति उत्सुक है, ईमान वालों के प्रति बहुत करुणामय, अत्यंत दयावान् है। ।" [सूरतुत-तौबा : 128].

"ला इलाहा इल्लल्लाहु" की गवाही देने का अर्थ : यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है।

मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के अल्लाह के रसूल होने की गवाही देने का अर्थ : यह है कि -आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने जो आदेश दिया है उसका अनुपालन करना, जो सूचनाएँ दी हैं उनकी पुष्टि करना, जिन बातों से रोका है उनसे रुक जाना तथा अल्लाह की उपासना उसी तरीक़ा अनुसार करना जो आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने दर्शाया है।

दूसरा स्तंभ : नमाज़ स्थापित करना।

महान अल्लाह ने फरमाया : "तथा नमाज़ स्थापित करो।" [सूरतुल-बक़रा : 110]।

नमाज़ स्थापित करने का मतलब यह है कि उसे अल्लाह के बताए हुए और उसके रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के सिखाए हुए तरीक़े के अनुसार अदा किया जाए।

तीसरा स्तंभ : ज़कात देना।

महान अल्लाह ने फरमाया : "तथा ज़कात दो।" [सूरतुल-बक़रा : 110]।

अल्लाह ने ज़कात फ़र्ज़ इसलिए की है, ताकि मुसलमान के ईमान की सच्चाई की परीक्षा ली जाए, अल्लाह ने धन के रूप में जो नेमत दे रखी है उसका शुक्र अदा हो तथा ग़रीबों और जरूरतमंदों के लिए सहायता हो।

ज़कात देने से अभिप्राय उसे उसके हक़दारों को देना है।

यह धन में एक अनिवार्य हक़ है जब वह एक निश्चित राशि तक पहुँच जाए। ज़कात आठ प्रकार के लोगों को दी जाती है, जिनका उल्लेख अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में किया है और जिनमें फ़क़ीर तथा मिस्कीन भी शामिल हैं।

ज़कात का उद्देश्य धनवानों के दिलों में दया तथा करुणा की भावना को जागृत करना, मुसलमान के नैतिक मूल्यों और धन को शुद्ध करना, निर्धनों तथा ज़रूरतमंद लोगों को संतुष्ट करना तथा मुस्लिम समुदाय के सदस्यों के बीच प्रेम और भाईचारे के बंधन को मजबूत करना। यही कारण है कि एक नेक मुसलमान उसे आंतरिक प्रसन्नता के साथ निकालता है और ज़कात देने

को अपना सौभाग्य समझता है। क्योंकि इसके द्वारा अन्य लोगों के जीवन में खुशी लाई जाती है।

ज़कात ज़ख़ीरा किए हुए सोना, चाँदी, नक़दी नोट और ऐसे व्यापारिक सामान जिन्हें लाभ के उद्देश्य से क्रय-विक्रय के लिए तैयार रखा गया हो, उनका 2.5% अदा करना होता है। इन धनों की ज़कात उस समय देनी होती है जब उनकी क़ीमत एक निश्चित मात्रा तक पहुंच जाएँ और इन पर एक पूरा वर्ष गुज़र जाए।

इसी तरह एक निश्चित संख्या में हो जाने पर पशुओं जैसे ऊँट, गाय और बकरियों पर भी ज़कात अनिवार्य है, जब वे वर्ष का अधिकतर भाग धरती की घास चरकर गुज़ारते हों और उनका मालिक उन्हें खिलाने का प्रबंध न करता हो।

इसी प्रकार, धरती से निकलने वाले अनाजों, फलों, खनिजों तथा ख़ज़ानों पर भी ज़कात वाजिब है, जब वे एक निश्चित मात्रा तक पहुंच जाएँ।

चौथा स्तंभ : रमज़ान के महीने के रोज़े रखना

महान अल्लाह ने फरमाया : "ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिए गए हैं, जिस प्रकार तुमसे पूर्व लोगों पर अनिवार्य किए गए थे, ताकि तुम अल्लाह से डरो।" [सूरतुल-बक़रा : 110]।

रमज़ान हिजरी कैलेंडर का नवाँ महीना है। मुसलमानों के यहाँ यह सम्माननीय महीना है।

अन्य महीनों की तुलना में इसका एक विशिष्ट स्थान है। इस पूरे महीने का रोज़ा रखना इस्लाम के पाँच स्तंभों में से एक स्तंभ है।

रमज़ान के महीने का रोज़ा रखने से मुराद, पूरे रमज़ान महीने के दिनों में फ़ज्र प्रकट होने से सूर्यास्त तक खाने, पीने, संभोग तथा अन्य सारे रोज़ा तोड़ने वाले कार्यों से दूर रहकर अल्लाह की इबादत करना है।

पाँचवाँ स्तंभ : अल्लाह के घर का हज्ज करना

महान अल्लाह ने फरमाया : "तथा अल्लाह के लिए लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो वहाँ तक पहुंचने की ताक़त रखता हो।" [सूरत आल-इमरान : 97]।

हज्ज जीवन में एक बार ऐसे व्यक्ति को करना है जो मक्का तक पहुँचने की शक्ति रखता हो। हज्ज नाम है विशिष्ट दिनों में विशिष्ट इबादतों को करने के लिए मक्का में स्थित अल्लाह के पवित्र घर काबा तथा अन्य पवित्र स्थानों तक पहुँचने का। अल्लाह के अंतिम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- और पूर्व के अन्य नबियों ने भी हज्ज किया है। इबराहीम अलैहिस्सलाम को तो अल्लाह ने आदेश दिया था कि लोगों के अंदर हज्ज का एलान कर दें। इसका उल्लेख अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में भी किया है। अल्लाह ने फरमाया : "और लोगों में हज्ज की घोषणा कर दे। वे आएँगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली-पतली सवारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आएँगी।" [सूरतुल-हज्ज : 27]।

आइए ईमान के स्तंभों के बारे में जानें

अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से ईमान के बारे में पूछा गया तो फरमाया : "ईमान यह है कि तुम अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अंतिम दिन तथा भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर विश्वास रखो।"

ईमान के स्तंभ से मुराद ऐसी हार्दिक इबादतें हैं जो हर मुसलमान पर अनिवार्य हैं और जिन पर विश्वास रखे बिना किसी व्यक्ति का इस्लाम सही नहीं हो सकता है। यही कारण है कि उन्हें ईमान के स्तंभ का नाम दिया गया है। इनके तथा इस्लाम के स्तंभों के बीच अंतर यह है कि इस्लाम के स्तंभ ऐसे ज़ाहिरी कार्य हैं जिन्हें इनसान शरीर के अंगों द्वारा करता है, जैसे ज़बान से अल्लाह के एकमात्र पूज्य होने और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के अल्लाह के संदेष्टा होने का इक़रार करना, नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना आदि। जबकि ईमान के स्तंभ ऐसे हृदय के कार्य हैं जिन्हें इनसान अपने हृदय द्वारा करता है। जैसे अल्लाह, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर विश्वास रखना।

ईमान का अर्थ : ईमान नाम है अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, आख़िरत के दिन और भले-बुरे भाग्य पर हृदय से दृढ़ विश्वास रखना और जो कुछ अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम- हिदायत लाए हैं उसका पालन करना और उसे लागू करना : ज़बान से बोलकर, जैसे ला इलाहा इल्लल्लाह कहना, क़ुरआन पढ़ना, अल्लाह की पवित्रता बयान करना और उसकी प्रशंसा करना,

तथा शरीर के ज़ाहिरी अंगों से अमल करके, जैसे कि नमाज़ पढ़ना, हज्ज करना और रोज़ा रखना... तथा हृदय से संबंधित छिपे हुए अंगों से अमल करना, जैसे अल्लाह का भय रखना, उसपर भरोसा करना और उसके प्रति निष्ठावान रहना।

विशेषज्ञों ने इसकी संक्षिप्त परिभाषा करते हुए कहा है : ईमान नाम है हृदय में विश्वास रखने, ज़बान से पुष्टि करने और शरीर के अंगों द्वारा अमल करने का, जो पुण्य के काम से बढ़ता और गुनाह के काम से घटता है।

पहला स्तंभ : अल्लाह पर ईमान

महान अल्लाह ने फरमाया : "वास्तव में, ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाए अल्लाह पर।" [सूरतुन-नूर : 62]।

अल्लाह पर ईमान की मांग यह है कि उसे उसके रब होने और उसके पूज्य होने, तथा उसके अपने नामों एवं गुणों में एकल माना जाए। इसके अंदर निम्नलिखित बातें आती हैं :

- अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान रखना।

- उसके पालनहार तथा हर चीज़ का मालिक, सृष्टिकर्ता, अन्नदाता तथा प्रबंधन करने वाल होने पर ईमान रखना।

- अल्लाह के पूज्य होने तथा इस बात पर ईमान रखना कि केवल वही सारी इबादतों, जैसे नमाज़, दुआ, नज़्र, ज़बह, मदद माँगना और शरण माँगना आदि का हक़दार है और इनमें उसका कोई साझी नहीं है।

- अल्लाह के उन सुंदर नामों तथा उच्च गुणों पर ईमान रखना जिन्हें स्वयं उसने अपने लिए या उसके नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने उसके लिए सिद्ध किया है। इसी तरह अल्लाह को उन नामों एवं गुणों से पवित्र मानना जिनसे उसने स्वयं अपने आपको या जिनसे उसके नबी ने उसे पवित्र बताया है। साथ ही इस बात का विश्वास रखना कि उसके सभी नाम एवं गुण सुंदरता और श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचे हुए हैं, तथा यह कि उसके जैसी कोई वस्तु नहीं है और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।

दूसरा स्तंभ : फ़रिश्तों पर ईमान

महान अल्लाह ने फरमाया : "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो आकाशों तथा धरती का पैदा करने वाला है, (और) दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को संदेशवाहक बनाने वाला है। वह उत्पत्ति में जो चाहता है अधिक करता है। निःसंदेह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।" [सूरत फ़ातिर : 1]।

हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि फ़रिश्ते अदृश्य सृष्टि हैं तथा वे अल्लाह के बंदे हैं, जिन्हें अल्लाह ने नूर से पैदा किया है और अपना आज्ञाकारी बनाया है।

हमारा विश्वास है कि फ़रिश्ते एक महान सृष्टि हैं, जिनकी शक्ति एवं संख्या का ज्ञान केवल अल्लाह को है। उनमें से हर एक के लिए अल्लाह की दी हुई कुछ विशेषताएँ, नाम और काम हैं। एक फ़रिश्ते का नाम जिबरील है, जिसका काम था अल्लाह के संदेश को उसके पैग़ंबरों तक पहुँचाना।

तीसरा स्तंभ : किताबों पर ईमान

महान अल्लाह ने फरमाया : " (ऐ मुसलमानो!) तुम कह दो : हम अल्लाह पर ईमान लाए और उसपर जो हमारी ओर उतारा गया, और जो इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब तथा उसकी संतान की ओर उतारा गया, और जो मूसा एवं ईसा को दिया गया तथा जो समस्त नबियों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।" [सूरतुल-बक़रा : 136]।

किताबों पर ईमान से मुराद है इस बात पर दृढ़ विश्वास रखना कि सारे आसमानी ग्रंथ अल्लाह की वाणी हैं।

और यह दृढ़ विश्वास रखना कि उन्हें सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह की ओर से उसके रसूलों पर उसके बंदों के लिए स्पष्ट सत्य के साथ उतारा गया है।

और यह कि अल्लाह ने अपने अंतिम संदेष्टा मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को सभी मनुष्यों की ओर भेजने के साथ ही, आपको दी

गई शरीयत द्वारा पिछली सारी शरीयतों को निरस्त कर दिया है और क़ुरआन को सारे आकाशीय ग्रंथों का संरक्षक, उनपर गवाह तथा उनका निरस्तकर्ता घोषित किया है। उसने इस बात की ज़िम्मेवारी भी ली है कि उसमें कोई परिवर्तन या उसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं होनी है। महान अल्लाह ने फरमाया : "निःसंदेह हमने ही यह ज़िक्र (क़ुरआन) उतारा है और हम ही इसके रक्षक हैं।" [सूरतुल-हिज्र : 9]; चूँकि पवित्र क़ुरआन मनुष्य की ओर उतारी जाने वाली अंतिम पुस्तक है, अल्लाह के रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अंतिम रसूल हैं और इस्लाम धर्म क़ियामत के दिन तक लोगों के लिए अल्लाह का पसंद किया हुआ धर्म है, इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया : "निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है।" [सूरत आल-इमरान : 19]।

जिन आसमानी ग्रंथों का उल्लेख अल्लाह ने अपनी किताब में किया है, इस प्रकार हैं :

पवित्र क़ुरआन : इसे अल्लाह ने अपने नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा है।

तौरात : इसे अल्लाह ने अपने नबी मूसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारा था।

इंजील : इसे अल्लाह ने अपने नबी ईसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारा था।

ज़बूर : इसे अल्लाह ने अपने नबी दाऊद -अलैहिस्सलाम- पर उतारा था।

इबराहीम के ग्रंथ : इन्हें अल्लाह ने अपने नबी इबराहीम -अलैहिस्सलाम- पर उतारा था।

चौथा स्तंभ : रसूलों पर ईमान

महान अल्लाह ने फरमाया : "और निःसंदेह हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (अल्लाह के अलावा की पूजा) से बचो।" [सूरतुन-नह्ल : 36]।

रसूलों पर ईमान का अर्थ है यह दृढ़ विश्वास रखना कि अल्लाह ने हर समुदाय में एक संदेष्टा भेजा है जिसने उन्हें अकेले अल्लाह की इबादत की ओर बुलाया और उसके अतिरिक्त पूजे जाने वाले सब पूज्यों को नकारने का आह्वान किया।

इसी तरह यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि सारे नबीगण मनुष्य तथा अल्लाह के बंदे थे, सच्चे थे तथा पुष्टि किए गए थे, धर्मपरायण तथा अमानतदार थे, सत्य का मार्ग दिखाने वाले और सत्य पर चलने वाले थे, जिन्हें अल्लाह ने उनकी सच्चाई को प्रमाणित करने वाले चमत्कार (मोजिज़े) प्रदान किए थे। साथ ही यह कि उन्होंने अल्लाह की ओर से प्रदान किए हुए संदेश को पहुँचाया और सारे के सारे नबी स्पष्ट सत्य और उज्जवल मार्ग पर थे।

मूल रूप से शुरू से अंत तक सारे के सारे नबियों का आह्वान एक था और वह है केवल एक सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह की इबादत करना और किसी को उसका साझी न बनाना।

पाँचवाँ स्तंभ : आख़िरत के दिन पर ईमान

अल्लाह तआला का फरमान है : "अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह तुम्हें प्रलय के दिन अवश्य एकत्र करेगा, जिसमें कोई संदेह नहीं, तथा अल्लाह से अधिक सच्ची बात वाला और कौन होगा?" [सूरतुन-निसा : 87]।

आख़िरत के दिन पर ईमान से मुराद है, आख़िरत के दिन से संबंधित जिन बातों की सूचना सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने अपनी किताब में दी है या फिर जिनके बारे में हमारे नबी -मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने बताया है, उन सब पर दृढ़ विश्वास रखना। आख़िरत से संबंधित कुछ बातें; इनसान की मृत्यु, दोबारा जीवित किया जाना, सब लोगों का एकत्र किया जाना, सिफ़ारिश, मीज़ान, हिसाब, जन्नत और जहन्नम आदि हैं।

छठा स्तंभ : भली-बुरी तक़दीर पर ईमान

अल्लाह तआला का फरमान है : "निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [सूरतुल-क़मर : 49]।

भली-बुरी तक़दीर पर ईमान का अर्थ है, इस बात का पूर्ण विश्वास कि इस दुनिया में सृष्टियों पर जो भी घटनाएँ घटती हैं, वह अल्लाह की जानकारी

में हैं, उसी के अनुमान एवं फ़ैसले से यह सब घटित होती हैं, उसके आदेश और फ़ैसले में कोई उसका साझी नहीं। उनका विवरण इनसान की सृष्टि से पहले लिख लिया गया है। साथ ही यह कि इनसान का अपना इरादा और उसकी अपनी चाहत भी होती है और और वह सत्य में अपने कर्मों का कर्ता है, लेकिन यह सारी चीज़ें अल्लाह के ज्ञान, इरादे और चाहत के दायरे से बाहर नहीं हैं।

भाग्य पर ईमान की निम्नलिखित चार श्रेणियाँ हैं :

पहली : अल्लाह के विस्तृत एवं समग्र ज्ञान पर विश्वास रखना।

दूसरी : इस बात पर विश्वास रखना कि अल्लाह ने क़ियामत तक घटित होने वाली सारी घटनाओं को लिख रखा है।

तीसरी : अल्लाह के अचूक इरादे तथा संपूर्ण सामर्थ्य पर विश्वास रखना और मानना कि वह जो चाहे, होगा और जो न चाहे, नहीं होगा।

चौथी : इस बात पर विश्वास रखना कि अल्लाह ही ने सारी चीज़ों की रचना की है और इस कार्य में उसका कोई साझी नहीं है।

अब हम वुज़ू सीखेंगे

अल्लाह तआला का फरमान है : " निःसंदेह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो बहुत तौबा करने वाले हैं और उनसे प्रेम करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं।" [सूरतुल-बक़रा : 222]

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया : "तुम मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू करो।"

नमाज़ की महानता यह है कि अल्लाह ने उससे पहले तहारत (पाक होने) को अनिवार्य किया है और उसे उसके सही होने की शर्त क़रार दिया है। तहारत नमाज़ की चाभी और उसकी महत्ता का ऐसा एहसास है जिससे दिल नमाज़ की ओर खिंचा चला आता है। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया: "स्वच्छता आधा ईमान है ... तथा नमाज़ प्रकाश है।"

एक अन्य हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जो अच्छी तरह वुज़ू करता है, उसके पाप उसके शरीर से निकल जाते हैं।"

इस तरह जब बंदा अपने पालनहार के सामने उपस्थित होता है, तो वह वुज़ू के रूप में अनुभव होने वाली स्वच्छता प्राप्त कर चुका होता है और इस इबादत की अदायगी के माध्यम से आंतरिक स्वच्छता भी प्राप्त कर चुका होता है, साथ ही वह अल्लाह के प्रति निष्ठावान होता है और अल्लाह के

नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के तरीक़े का अनुपालन कर रहा होता है।

वो कार्य, जिनके लिए वुज़ू करना अनिवार्य है:

1- हर प्रकार की नमाज़, फ़र्ज़ हो या नफ़्ल।

2- काबा का तवाफ़ (चक्कर लगाना)।

3- क़ुरआन को छूना।

पवित्र पानी से वुज़ू तथा स्नान करना :

पवित्र पानी से मुराद हर वह पानी है जो आसमान से बरसा हो या धरती से फूटा हो और अपनी असल अवस्था पर बाकी हो, और उसके तीन गुणों यानी रंग, स्वाद तथा गंध में से कोई गुण किसी ऐसी चीज़ के कारण न बदला हो जो पानी की पवित्रता को समाप्त कर देती है।

वुज़ू का तरीक़ा :

पहला चरण : नीयत करना। नीयत का स्थान दिल है। इसका अर्थ है, अल्लाह की निकटता प्राप्त करने हेतु दिल में किसी इबादत की नीयत करना।

दूसरा चरण : दोनों हथेलियों को धोना।

तीसरा चरण : कुल्ली करना।

कुल्ली करने का मतलब है मुँह में पानी डालकर अंदर घुमाना और उसके बाद बाहर निकाल देना।

चौथा चरण : नाक में पानी लेना।

नाक में पानी लेने का अर्थ है, सांस के माध्यम से नाक के अंतिम भाग तक पानी ले जाना।

उसके बाद नाक झाड़ना। यानी नाक के अंदर जो गंदगियाँ हों, उन्हें साँस द्वारा निकाल बाहर करना।

पाँचवाँ चरण : चेहरे को धोना।

चेहरे की सीमाएँ :

चेहरा शरीर के उस भाग को कहते हैं जिससे किसी का सामना होता है।

चौड़ाई में इसकी सीमा एक कान से दूसरे कान तक है।

जबकि लंबाई में इसकी सीमा सिर के बाल उगने के सामान्य स्थान से ठुड्डी के अंतिम भाग तक है।

चेहरे को धोने में उसके हल्के बाल, उसका सफ़ेद भाग और कान के सामने की पट्टियों को धोना भी शामिल है।

सफ़ेद भाग से मुराद कान के सामने की पट्टी और कान की लौ के बीच का भाग है।

कान के सामने की पट्टी से मुराद वे बाल हैं जो कान के छिद्र के सामने की उभरी हुई हड्डी के ऊपर होते हैं, जिसका विस्तार ऊपर में सिर के अंदर तक और नीचे कान के सामने के भरे हुए भाग तक रहता है।

इसी तरह चेहरे को धोने की अनिवार्यता में दाढ़ी के घने बालों का बाहरी और लटका हुआ भाग भी शामिल है।

छठा चरण : दोनों हाथों को उँगलियों के किनारों से कोहनियों तक धोना।

हाथों के साथ कोहनियों को धोना भी फ़र्ज़ है।

सातवाँ चरण : हाथों से पूरे सिर का, कानों के साथ, एक बार मसह करना।

मसह का आरंभ सिर के अगले भाग से करते हुए दोनों हाथों को गुद्दी तक ले जाएगा और फिर उनको वापस लाएगा।

और दोनों तर्जनियों को अपने दोनों कानों में डालेगा।

और अपने दोनों अंगूठों को कानों के ज़ाहिरी भाग के चारों ओर फेरेगा और इस प्रकार कान के बाहरी एवं भीतरी भाग का मसह करेगा।

आँठवाँ चरण : दोनों पैरों को उँगलियों के किनारों से एड़ियों तक धोना। पैरों को धोते समय टखनों को धोना भी फ़र्ज़ है।

टखनों से मुराद पिंडली के सबसे निचले भाग में दो उभरी हुई हड्डियाँ हैं।

वुज़ू निम्नलिखित कारणों से टूट जाता है :

1- दोनों रास्तों से निकलने वाली चीज़ें से, जैसे पेशाब, पाखाना, वायु, वीर्य और मज़ी।

2- गहरी नींद, या बेहोशी, या नशा अथवा पागलपन के कारण अक़्ल के लुप्त हो जाने से।

3- स्नान को अनिवार्य करने वाली सारी चीज़ें, जैसे जनाबत, माहवारी और प्रसवोत्तर रक्तस्रवण आदि।

जब इनसान पेशाब या पाखाना करे, तो उसे अनिवार्य रूप से गंदगी को या तो पवित्र करने वाले पानी से साफ़ करना है, जो कि उत्तम है, या फिर अन्य गंदगी दूर करने वाली वस्तुओं से जैसे पत्थर, मिट्टी, पेपर अथवा कपड़े आदि से साफ़ करना है। इस शर्त के साथ कि तीन अथवा अधिक बार इस तरह साफ़ करना है कि सफ़ाई प्राप्त हो जाए तथा किसी पवित्र एवं हलाल वस्तु से साफ़ किया जाए।

चमड़े एवं कपड़े आदि के मोज़ों पर मसह

जब इनसान चमड़े अथवा कपड़े आदि का मोज़ा पहना हुआ हो, तो उन्हें धोने की बजाय उनपर मसह किया जा सकता है। लेकिन कुछ शर्तों के साथ, जो इस प्रकार हैं :

1- उन्हें छोटी तथा बड़ी नापाकियों से संपूर्ण पवित्रता प्राप्त करने के बाद पहना जाए, जिसमें पैरों को भी धोया गया हो

2- दोनों मोज़े पवित्र हों, नापाक नहीं।

3- मसह उसकी नियत अवधि में किया जाए।

4- मोज़े हलाल हों। मसलन चुराए हुए या छीने हुए न हों।

अरबी शब्द "الخف" से मुराद पतले चमड़े आदि का मोज़ा है। इसी के समान वे जूते भी हैं, जो दोनों क़दमों को ढाँपे होते हैं।

जबकि अरबी शब्द "الجورب" (अल-जौरब) से मुराद कपड़े आदि का मोज़ा है। अरबी में इसे "الشراب" (अश्शुर्राब) भी कहा जाता है।

मोज़ों पर मसह की अनुमति की हिकमत :

मोज़ों पर मसह करने की अनुमति दरअसल मुसलमानों को आसानी प्रदान करने के लिए दी गई है, जिन्हें मोज़ा रखकर पैरों को धोने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है, विशेष रूप से जाड़े के मौसम में, सख़्त ठंडी के समय और यात्रा में।

मसह की अवधि :

मसह की अवधि निवासी के लिए एक दिन एक रात (24 घंटा) है।

जबकि यात्री के लिए तीन दिन तीन रात (72 घंटा) है।

मसह की इस अवधि का आरंभ वुज़ू टूटने के बाद मोज़े पर पहले मसह से होगा।

मोज़ों पर मसह का तरीक़ा :

1- दोनों हाथों को तर किया जाए।

2- हाथ को क़दम के ऊपरी भाग पर (उँगलियों के किनारों से पिंडली के आरंभिक भाग तक) फेरा जाए।

3- दाएँ क़दम का मसह दाएँ हाथ से और बाएँ क़दम का मसह बाएँ हाथ से किया जाएगा।

मसह को निष्प्रभावी करने वाली चीज़ें :

1- हर वह चीज़ जिसके कारण वुज़ू या स्नान वाजिब होता है।

2- मसह की अवधि का समाप्त हो जाना।

स्नान

जब कोई पुरुष अथवा स्त्री संभोग करे या फिर नींद अथवा जागने की अवस्था में वासना से उसका वीर्य स्खलन हो जाए, तो दोनों पर स्नान करना वाजिब होगा, ताकि नमाज़ पढ़ सकें एवं अन्य ऐसे कार्य कर सकें, जिनके लिए तहारत (पाक होना) अनिवार्य है। इसी तरह जब कोई स्त्री माहवारी एवं निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्रवण) से पवित्र हो, तो नमाज़ पढ़ने या अन्य कोई ऐसा कार्य करने से पहले जिसके लिए तहारत अनिवार्य है, उसपर स्नान करना अनिवार्य है।

स्नान का तरीक़ा कुछ इस प्रकार है :

स्नान का तरीक़ा यह है कि मुसलमान किसी भी तरह से अपने पूरे शरीर पर पानी बहाए, जिसमें कुल्ली करना तथा नाक में पानी चढ़ाना भी शामिल है। पूरे शरीर पर पानी बहा देने से बड़ी नापाकी दूर हो जाएगी और पवित्रता प्राप्त हो जाएगी।

जुंबी जब तक स्नान न कर ले, निम्नलिखित कार्य नहीं कर सकता :

1- नमाज़।

2- काबा का तवाफ़।

3- मस्जिद में रुकना। यदि न रुके, तो केवल गुज़रने की अनुमति है।

4- मुसहफ़ को छूना।

5- क़ुरआन पढ़ना।

तयम्मुम

जब किसी मुसलमान को पवित्रता प्राप्त करने के लिए पानी न मिल सके या किसी रोग आदि के कारण पानी का प्रयोग न कर सके और नमाज़ का समय निकल जाने का भय हो, तो वह मिट्टी से तयम्मुम करेगा।

इसका तरीक़ा यह है कि अपने हाथों को एक बार पवित्र मिट्टी पर मारे और उनसे केवल अपने चेहरे तथा दोनों हथेलियों का मसह करे। इसके लिए मिट्टी का पाक होना शर्त है।

तयम्मुम निम्नलिखित चीज़ों से टूट जाता है :

1- तयम्मुम उन तमाम चीज़ों से अमान्य हो जाता है, जिनसे वुज़ू अमान्य हो जाता है।

2- तयम्मुम जिस काम के लिए किया गया है, उसे शुरू करने से पहले पानी मिल जाने से भी तयम्मुम टूट जाता है।

नमाज़ कैसे पढ़ें

अल्लाह ने मुसलमान पर दिन एवं रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, और वे हैं : फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग्रिब तथा इशा।

नमाज़ के लिए तैयारी

जब नमाज़ का समय हो जाए तो यदि मुसलमान छोटी नापाकी में या बड़ी नापाकी में हो, तो उससे पवित्रता प्राप्त करेगा।

बड़ी नापाकी से मुराद वह नापाकी है जिसके कारण मुसलमान पर स्नान करना अनिवार्य हो जाता है।

छोटी नापाकी से मुराद वह नापाकी है जिसके कारण मुसलमान पर वुज़ू करना अनिवार्य होता है।

मुसलमान पाक वस्त्र पहनकर, अशुद्धियों से पवित्र स्थान पर, अपने गुप्तांगों को ढककर नमाज़ पढ़ेगा।

मुसलमान नमाज़ के समय उचित वस्त्र से सुशोभित होकर उपस्थित होगा और अपने शरीर को ढाँपकर रखेगा। पुरुष के लिए नमाज़ की स्थिति में नाभि तथा घुटने के बीच के किसी भी भाग को प्रकट करना जायज़ नहीं है।

स्त्री के लिए नमाज़ की अवस्था में चेहरे तथा दोनों हथेलियों के अतिरिक्त शरीर के अन्य किसी भाग को खोलना जायज़ नहीं है।

नमाज़ की हालत में कोई मुसलमान नमाज़ से संबंधित अज़कार तथा दुआओं के अतिरिक्त कोई शब्द ज़बान से नहीं निकालेगा, इमाम को ध्यान

से सुनेगा, तथा नमाज़ की अवस्था में इधर-उधर नहीं देखेगा। लेकिन यदि नमाज़ में पढ़ी जाने वाली क़ुरआन की आयतें, अज़कार तथा दुआओं को याद न कर सके, तो नमाज़ के अंत तक अल्लाह को याद करेगा और उसकी पवित्रता बयान करेगा और जल्द से जल्द नमाज़ तथा उसके अज़कार एवं दुआओं को याद कर लेगा।

आएं अब नमाज़ सीखते हैं

चरण 1 : उस नमाज़ की नीयत करना जिसे अदा करना हो। याद रहे कि नीयत दिल से होती है।

वुज़ू कर लेने के बाद क़िबला की ओर मुँह कर लेंगे और यदि शक्ति हो तो खड़े होकर नमाज़ पढ़ेंगे।

चरण 2 : दोनों हाथों को दोनों कंधों के बराबर उठाना है और नमाज़ में प्रवेश करने के इरादे से "अल्लाहु अकबर" कहना है।

चरण 3 : हदीस में आई हुई दुआ-ए-इसतिफ़ताह (नमाज़ आरंभ करने की दुआ) पढ़ना है। एक दुआ-ए-इसतिफ़ताह इस प्रकार है : "सुबहानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका, व तबारक्स्मुका, व तआला जद्दुका, व लाइलाहा गैरुका" (तू पवित्र है ऐ अल्लाह! हम तेरी प्रशंसा करते हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी महिमा उच्च है तथा तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है)।

चरण 4 : धुतकारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगना है। वह इस तरह : (أعوذُ باللهِ من الشيطان الرجيم) "मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।"

चरण 5 : फिर हर रकअत में सूरत फ़ातिहा पढ़ना है, जो इस प्रकार है:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَـٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾ الرَّحْمَـٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣﴾ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٤﴾ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿٥﴾ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

"शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु एवं अति कृपावान है। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है। जो अत्यंत कृपाशील तथा दयावान है। जो बदले के दिन का मालिक है। (ऐ अल्लाह!) हम केवल तेरी ही उपासना करते हैं तथा केवल तुझ ही से सहायता माँगते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा। उनका मार्ग, जिनको तूने पुरष्कृत किया। उनका नहीं, जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका, जो कुपथ हो गए।"

सूरत फ़ातिहा के बाद प्रत्येक नमाज़ की केवल पहली तथा दूसरी रकअत में क़ुरआन का जितना भाग हो सके, पढ़ना है। यह यद्यपि वाजिब नहीं है, लेकिन इससे बड़ा प्रतिफल प्राप्त होता है।

चरण 6 : उसके बाद "الله أكبر" कहेंगे और फिर इस तरह रुकू करेंगे कि पीठ सीधी रहे, दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रहें और उनकी उँगलियाँ एक-

दूसरी से अलग रहें। फिर रुकू में कहेंगे : "سبحان ربي العظيم" अर्थात् मेरा महान पालनहार पवित्र है।

चरण 7 : रुकू से सिर "سمع الله لمن حمده" कहते हुए और अपने दोनों हाथों को कंधों के बराबर उठाते हुए, उठाएँगे, फिर जब शरीर ठीक सीधा हो जाए तो कहेंगे : "ربنا ولك الحمد".

चरण 8 : "अल्लाहु अकबर" कहेंगे और दोनों हाथों, दोनों घुटनों, दोनों क़दमों तथा पेशानी एवं नाक पर सजदा करेंगे और सजदे में कहेंगे : "سبحان ربي الأعلى".

चरण 9 : फिर "अल्लाहु अकबर" कहेंगे और सजदा से उठेंगे। जब इस तरह ठीक से बाएँ क़दम पर बैठ जाएँगे कि दायाँ क़दम खड़ा हो और पीठ बिलकुल सीधी हो, तो कहेंगे : "رب اغفر لي".

चरण 10 : फिर "अल्लाहु अकबर" कहना है और पहले सजदा ही की तरह एक और सजदा करना है।

चरण 11 : फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदा से उठना है और सीधा खड़ा हो जाना है। इस तरह नमाज़ की शेष रकअतों में वही कुछ करना है जो पहली रकअत में किया था।

जुहर, अस्र, मग्रिब तथा इशा की नमाज़ की दूसरी रकअत के बाद पहला तशह्हुद पढ़ने के लिए बैठ जाना है। तशह्हुद इस प्रकार है :

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ) "हर प्रकार का सम्मान, समग्र दुआएँ एवं समस्त अच्छे कर्म व अच्छे कथन अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आपके ऊपर सलाम, अल्लाह की दया तथा उसकी बरकतें हों, हमारे ऊपर एवं अल्लाह के नेक बंदों के ऊपर भी सलाम की जलधारा बरसे, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य माबूद (पूज्य) नहीं एवं मुहम्मद अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं।" फिर इसके बाद तीसरी रकअत के लिए खड़े हो जाएँगे।

प्रत्येक नमाज़ की अंतिम रकअत के बाद अंतिम तशह्हुद पढ़ने के लिए बैठेंगे, जो इस प्रकार है : (التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ) "हर प्रकार का सम्मान, समग्र दुआएँ एवं समस्त अच्छे कर्म व अच्छे कथन अल्लाह के लिए हैं। ऐ नबी! आपके ऊपर सलाम, अल्लाह की दया तथा उसकी बरकतें हों, हमारे ऊपर एवं अल्लाह के नेक बंदों के ऊपर भी

सलाम की जलधारा बरसे, मैं साक्षी हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य माबूद (पूज्य) नहीं एवं मुहम्मद अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं। ऐ अल्लाह! तू उसी तरह दुरूद व सलाम भेज मुहम्मद एवं उनकी संतान पर जिस प्रकार से तूने इबराहीम एवं उनकी संतान पर दुरूद व सलाम भेजा है। निःसंदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद तथा उनकी संतान पर उसी प्रकार से बरकतों की बारिश कर जिस प्रकार से तूने इबराहीम एवं उनकी संतान पर बरकतों की बारिश की है। निःसंदेह तू प्रशंसा योग्य तथा सम्मानित है।"

चरण 12: इसके बाद हम नमाज़ से निकलने के इरादे से दायें ओर सलाम फेरेंगे और कहेंगे : "السلام عليكم ورحمة الله" तथा बायें ओर सलाम फेरेंगे और कहेंगे : "السلام عليكم ورحمة الله" इतना करने के बाद हमने नमाज़ अदा कर ली।

मुस्लिम स्त्री का पर्दा

अल्लाह तआला का फरमान है : "ऐ नबी! अपनी पत्नियों, अपनी बेटियों और ईमान वाले लोगों की स्त्रियों से कह दें कि वे अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। यह इसके अधिक निकट है कि वे पहचान ली जाएँ, फिर उन्हें कष्ट न पहुँचाया जाए। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।" [सूरतुल-अहज़ाब : 59]।

अल्लाह ने मुस्लिम महिला पर पर्दा तथा अपने पूरे शरीर को अजनबी पुरुषों से अपने क्षेत्र में प्रचलित पोशाक से ढाँपने को अनिवार्य किया है। अपने पति अथवा महरम पुरुषों के अतिरिक्त किसी और के सामने हिजाब उतारना जायज़ नहीं है। महरम से मुराद वे सारे लोग हैं जिनसे मुस्लिम महिला का निकाह स्थायी रूप से हराम है। और वे लोग हैं : पिता और जो भी बाप के सामान हो जैसे दादा, प्रदादा वगैरह, पुत्र और जो भी पुत्र के सामन हो जैसे पौत्र, परपौत्र आदि , चाचा, मामा, भाई, भाई का बेटा, बहन का बेटा, माँ का पति (सौतैला बाप), पति का पिता और और जो भी पति के बाप के समान हो जैसे पति के दादा, प्रदादा वगैरह, पति का पुत्र और जो भी पति के पुत्र समान हो जैसे पति के पौत्र, परपौत्र आदि , रज़ा'ई-भाई और रज़ा'ई-बाप। दूध से वह सब रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से होते हैं।

मुस्लिम महिला अपने पहनावा के संबंध में निम्नलिखित सिद्धांतों का ख़याल रखेगी :

1- पूरा शरीर ढका हुआ हो।

2- परिधान ऐसा न हो कि उसे महिला शृंगार के लिए पहनती हो ।

3- इतना पतला न हो कि शरीर झलकता हो।

4- ढीला-ढाला हो, इतना तंग न हो कि शरीर के किसी भाग को दर्शाता हो।

5- सुगंधित न हो।

6- पुरुषों के वस्त्र जैसा न हो।

7- लिबास उस प्रकार का न हो जिस प्रकार का लिबास गैर-मुस्लिम स्त्रियाँ अपने उपासनाओं तथा त्योहारों के अवसर पर पहनती हैं।

मोमिन के कुछ गुण

अल्लाह तआला का फरमान है : "(वास्तव में) ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, तो उनके दिल काँप उठते हैं, और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएँ, तो उनका ईमान बढ़ा देती हैं, और वे अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।" [सूरतुल-अनफ़ाल : 2]।

- वह सदा सच बोलता है और झूठ बोलने से गुरेज़ करता है।

- वह अपना वचन और प्रतिज्ञा पूरी करता है।

- झगड़ा करते समय बदज़बानी नहीं करता।

- अमानत की अदायगी करता है।

- अपने मुस्लिम भाई के लिए वही पसंद करता है जो अपने लिए पसंद करता है।

- वह उदार होता है।

- लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।

- खूनी रिश्तों को जोड़ के रखता है।

- अल्लाह के नियति पर संतुष्ट रहता है, खुशहाली के समय अल्लाह का शुक्र अदा करता है और परेशानी के समय सब्र करता है।

- हयादार होता है।

- सृष्टि पर दया करता है।

- उसका हृदय ईर्ष्या से पाक तथा उसके शरीर के अंग किसी पर ज़ुल्म करने से सुरक्षित होते हैं।

- वह क्षमाशील होता है।

- वह न सूद खाता है और न सूदी लेन-देन करता है।

- वह व्यभिचार में लिप्त नहीं होता।

- वह मदिरा पान नहीं करता।

- वह अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।

- वह न अत्याचार करता है और न विश्वासघात करता है।

- वह न चोरी करता है और न चालबाज़ी से काम लेता है।

- वह अपने माता-पिता का आज्ञापालन करता है और भलाई के काम में उनके आदेशों को मानता है, चाहे वह गैर-मुस्लिम ही क्यों न हों।

- वह अपने बच्चों को आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देता है, उन्हें शरीयत द्वारा अनिवार्य किए हुए कार्यों का आदेश देता है और बुरे तथा वर्जित कार्यों से रोकता है।

- वह ग़ैर-मुस्लिमों की धार्मिक विशिष्टताओं तथा ऐसी आदतों की, जो उनकी पहचान बन चुकी हों, की नक़्क़ाली नहीं करता।

मेरा सौभाग्य मेरे धर्म इस्लाम में है

अल्लाह तआला का फरमान है : "जो भी अच्छा कार्य करे, नर हो अथवा नारी, जबकि वह ईमान वाला हो, तो हम उसे अच्छा जीवन व्यतीत कराएँगे। और निश्चय हम उन्हें उनका बदला उन उत्तम कार्यों के अनुसार प्रदान करेंगे जो वे किया करते थे।" [सूरतुन-नह्ल : 97]।

एक मुसलमान को सबसे अधिक ख़ुशी तथा सबसे अधिक संतुष्टि उसका अपने पालनहार से ऐसा सीधा संबंध दिलाता है कि जिसमें किसी जीवित या मृत व्यक्ति अथवा किसी बुत आदि का कोई वास्ता न हो। अल्लाह ने अपनी पवित्र पुस्तक में इस बात का उल्लेख किया है कि वह सदा अपने बंदों के निकट रहता है, उन्हें सुनता है तथा उनकी दुआएँ क़बूल करता है। उसका फरमान है : "और (ऐ नबी!) जब मेरे बंदे आपसे मेरे बारे में पूछें, तो निश्चय मैं (उनसे) क़रीब हूँ। मैं पुकारने वाले की दुआ क़बूल करता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। तो उन्हें चाहिए कि वे मेरी बात मानें तथा मुझपर ईमान लाएँ, ताकि वे मार्गदर्शन पाएँ। " [सूरतुल-बक़रा : 186]। अल्लाह ने हमें उसे पुकारने का आदेश दिया है और इसे उसकी निकटता प्राप्त करने वाली एक महत्वपूर्ण इबादत भी कहा है। उसने कहा है : "तथा तुम्हारे पालनहार ने कहा है कि मुझसे प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा।" [सूरत गाफ़िर: 60]। अतः एक सदाचारी मुसलमान हमेशा अपनी ज़रूरतें अपने रब के

सामने रखता है, उसके सामने हाथ फैलाता है और सत्कर्मों द्वारा उसकी निकटता प्राप्त करने के प्रयास में रहता है।

दरअसल अल्लाह ने हमें इस दुनिया में बेकार नहीं, बल्कि एक बड़े उद्देश्य के लिए पैदा किया है। वह उद्देश्य यह है कि हम केवल उसी की इबादत करें और किसी को उसका साझी न बनाएँ। उसने हमें एक ऐसा व्यापक धर्म प्रदान किया है जो हमारे जीवन के सभी आम तथा खास कामों को व्यवस्थित करता है। उसने इसी न्याय पर आधारित धर्म के ज़रिए हमारे जीवन की ज़रूरतों यानी हमारे धर्म, जान, मान-सम्मान, बुद्धि और धर्म की रक्षा की है। जिसने शरई आदेशों का पालन करते हुए और हराम चीज़ों से दामन बचाते हुए जीवन व्यतीत किया, तो उसने इन ज़रूरी चीज़ों की रक्षा की और सौभाग्यशाली तथा संतुष्ट जीवन गुजारा।

एक मुसलमान का संबंध अपने पालनहार से बड़ा गहरा होता है, जो दिल में संतुष्टि एवं शांति लाता है, सुकून तथा प्रसन्नता का एहसास प्रदान करता है और इस बात की अनुभूति कराता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने मोमिन बंदे के साथ रहता है, उसका ख़याल रखता है और उसकी सहायता करता है। महान अल्लाह ने फरमाया : "अल्लाह उनका सहायक है, जो ईमान लाए। वह उन्हें अंधेरे से प्रकाश की ओर लाता है।" [सूरतुल-बक़रा : 257]।

यह महान संबंध दरअसल एक अनुभूति की अवस्था हुआ करती है जो इनसान को अल्लाह की इबादत में आनंद और उससे मिलने का शौक़

प्रदान करती है और उसकी अंतरात्मा को खुशियों के आकाश की सैर कराती है तथा ईमान की मिठास प्रदान करती है।

वह मिठास, जिसका स्वाद वही बयान कर सकता है, जिसने पुण्य के कार्य करके और गुनाहों से बचकर उसका स्वाद चखा हो। यही कारण है कि अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया : "उस व्यक्ति ने ईमान का मज़ा चख लिया, जो संतुष्ट हुआ अल्लाह से पालनहार के तौर पर, इस्लाम से धर्म तथा मुहम्मद से संदेशवाहक के तौर पर।"

जब किसी इनसान को इस बात का एहसास हो कि वह हमेशा अपने स्रष्टा के सामने रहता है, फिर उसे उसके नामों एवं गुणों के आधार पर जानता हो, उसकी इबादत ऐसे करता हो जैसे वह उसे देख रहा है, पूरी निष्ठा से उसकी उपासना करता हो और इससे उसका उद्देश्य अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को प्रसन्न करना न हो, तो वह दुनिया में सौभाग्यशाली जीवन व्यतीत करता है और आख़िरत में अच्छा स्थान प्राप्त करता है।

एक मुसलमान को दुनिया में जो भी विपत्तियाँ आती हैं, उनकी तपिश दूर हो जाती है यक़ीन की ठंडक, अल्लाह के निर्णय पर संतुष्टि और भाग्य के हर भले-बुरे फ़ैसले पर उसकी प्रशंसा एवं उनसे पूर्ण संतुष्टि से।

एक मुसलमान को अपने कल्याण, सुख-चैन तथा संतुष्टि में बढ़ोतरी के लिए अल्लाह का अधिक से अधिक ज़िक्र करना चाहिए। महान अल्लाह ने फरमाया : "(अर्थात वे) लोग जो ईमान लाए तथा जिनके दिल अल्लाह

के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतुष्टि मिलती है।" [सूरत अर-रा'द : 28]। एक मुसलमान अल्लाह के ज़िक्र तथा क़ुरआन की तिलावत में जितना अधिक लीन होता जाएगा, अल्लाह से उसका संबंध उतना ही अधिक मज़बूत होता जाएगा, उसकी आत्मा पवित्र होती जाएगी और उसका ईमान प्रबल होता जाएगा।

इसी तरह एक मुसलमान को अपने धर्म की बातें सही संदर्भों से प्राप्त करनी चाहिए, ताकि अल्लाह की इबादत उचित ज्ञान के आधार पर करे। अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया : "ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है।" जिस अल्लाह ने उसकी सृष्टि की है, वह उसके आदेशों का पालन खुले दिल से करे, चाहे उन आदेशों के रहस्य से अवगत हो या न हो। अल्लाह ने अपने पवित्र ग्रंथ में फरमाया : " तथा किसी ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्री को यह अधिकार नहीं कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का निर्णय कर दें, तो उनके लिए अपने मामले में कोई अख़्तियार बाक़ी रहे। और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करे, वह खुली गुमराही में पड़ गया।" [सूरतुल-अहज़ाब: 36]।

अल्लाह की दया और शांति की जलधारा बरसे हमारे नबी मुहम्मद तथा आपके परिजनों और सभी साथियों पर।

यह किताब संपन्न हुई।

विषय सूची

प्रस्तावना.....3

मेरा रब अल्लाह है.....6

मेरे नबी मुहम्मद - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - हैं 9

पवित्र क़ुरआन मेरे रब की वाणी है.....11

आइए इस्लाम के स्तंभों के बारे में जानें.....12

प्रथम स्तम्भ : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के रसूल हैं। 12

दूसरा स्तंभ : नमाज़ स्थापित करना। 13

तीसरा स्तंभ : ज़कात देना।..... 14

चौथा स्तंभ: रमज़ान के महीने के रोज़े रखना..... 15

पाँचवाँ स्तंभ : अल्लाह के घर का हज्ज करना..... 16

आइए ईमान के स्तंभों के बारे में जानें 17

पहला स्तंभ : अल्लाह पर ईमान 18

दूसरा स्तंभ : फ़रिश्तों पर ईमान 19

तीसरा स्तंभ : किताबों पर ईमान..... 20

चौथा स्तंभ : रसूलों पर ईमान 22

पाँचवाँ स्तंभ : आख़िरत के दिन पर ईमान..... 23
छठा स्तंभ : भली-बुरी तक़दीर पर ईमान..... 23
अब हम वुज़ू सीखेंगे..... 25
वुज़ू का तरीक़ा : 26
वुज़ू निम्नलिखित कारणों से टूट जाता है :..... 28
चमड़े एवं कपड़े आदि के मोज़ों पर मसह..... 29
स्नान..... 31
तयम्मुम 32
नमाज़ कैसे पढ़ें..... 33
मुस्लिम स्त्री का पर्दा..... 39
मेरा सौभाग्य मेरे धर्म इस्लाम में है..... 43
विषय सूची 47

Get to Know about Islam

in More Than 100 Languages

موسوعة الأحاديث النبوية
HadeethEnc.com

Encyclopedia of the Translations of the Prophetic Hadīths and their Commentaries

ISLAM HOUSE .com
IslamHouse.com

A Comprehensive Reference for Introducing Islam in the World's Languages

موسوعة القرآن الكريم
QuranEnc.com

Encyclopedia of the Translations of the Meanings and Interpretations of the Noble Qur'an

ما لا يسع أطفال المسلمين جهله
kids.islamenc.com

The Platform of What Muslim Children Must Know

موسوعة المحتوى الإسلامي
IslamEnc.com

A Selection of the Translated Islamic Content

بيان الإسلام
byenah.com

A Simplified Gateway for Introducing Islam and Learning its Rulings

Islamic Content Service Association in Languages

Da'wah, Guidance, and Community Awareness Association in Rabwah

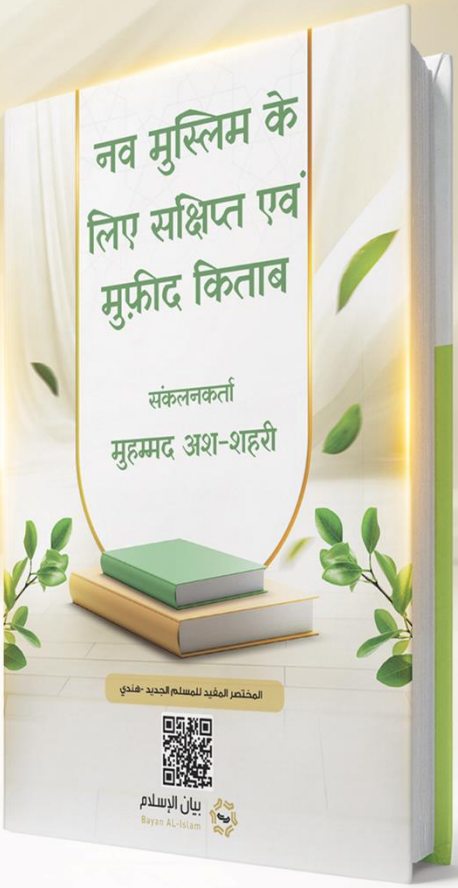

978-603-8412-49-2

Hi182